

सोलह सोमवार

व्रत कथा । 16

SOMVAR

VRAT KATHA

PDF

एक बार भगवान शिव अपनी पत्नी पार्वती के साथ धरती पर अमरावती नगरी में गए। जहां भगवान शिव का एक विशाल मंदिर था। भगवान शिव अपनी पत्नी पार्वती के साथ वहाँ विश्राम करने के लिए रुके। तब माता पार्वती ने कहा कि उन्हें बैकगैमौन खेलने की इच्छा है और पत्नी की इस इच्छा को जानकर भगवान शिव उनकी पत्नी के साथ सामाजिक खेल खेलने बैठ गए। चोसर लगते ही मंदिर का पुजारी आया जिसके पास माता पार्वती ने पूछा, बताओ पुजारी कौन है, आज इस खेल में किसकी जीत होगी?

तो इस पर पुजारी जी ने बताया कि इसमें महादेव जी की विजय होगी। लेकिन चोसर में माता पार्वती की जीत हुई और इस वजह से उन्होंने ब्राह्मण को झूठ बोलने के कारण कोढ़ी होने का श्राप दे दिया। माता पार्वती कैलाश लौट आईं और माता पार्वती के श्राप के कारण पुजारी का जीवन नरक बन गया। और माता पार्वती के श्राप के कारण कोई भी पंडित को

छूने से डरता था और लोग उन्हें देश से निकालने की बात करने लगे। राजा ने उसे देश से निकालने की बजाय मन्दिर से निकलवा दिया। और इसी तरह ब्राह्मण जो उस मंदिर का पुजारी था उसी मंदिर के बाहर बैठ कर भीख मांगने लगा।

कुछ समय बाद स्वर्ग से कोई अप्सराएं मंदिर में आईं और पंडित की दशा देखकर उनका हालचाल पूछा, और मैंने पूछा उनका हाल कैसा है? तो पंडित ने बताया कि वह माता पार्वती के श्राप के कारण ऐसा हो गया है। तो उसके बाद स्वर्ग से अप्सराओं के पुजारी को सोलह सोमवार व्रत करने की सलाह दी गई।

पंडित ने पूछा कि सोलह सोमवार का यह व्रत कैसे किया जाता है, तो ऐसी अप्सराओं ने कहा कि प्रत्येक सोमवार को सूर्योदय से पहले स्नान करके स्वच्छ वस्त्र धारण कर लें, एक किलो गेहूं का आटा लेकर उसके तीन भाग कर लें। और इसके बाद घी का

दीपक जलाकर गुड़, मिठाई, बेलपत्र, अक्षत, फूल, जनेऊ का जोड़ा लेकर भगवान शिव की पूजा करनी है। और बाद में आपको अपने बनाए हुए आटे के 3 भाग में से एक भाग भगवान शिव को अर्पित करना है और एक भाग को प्रसाद समझकर बच्चों में बांट देना है।

इस प्रकार जब व्रत करते-करते सोलह सोमवार बीत जाएं तो 17 सोमवार को लगभग सवा किलो आटे में गुड़ और घी मिलाकर चूरमा बनाना है। चूरमे में से भगवान शिव को भोग लगाना है। उसे अपने आसपास की महिलाओं, पुरुषों और बच्चों में बांटना है। और इस प्रकार सोलह सोमवार का व्रत करने से आपका कौढ़ का रोग दूर हो जाएगा। यह सब बताकर स्वर्ग की अप्सरा स्वर्ग चली गई।

इसके बाद उस पंडित ने उसी विधि से सोलह सोमवार का व्रत किया और भगवान शिव की कृपा से

उसका कोढ़ नष्ट हो गया और उसके बाद राजा ने उसे फिर से मंदिर का पुजारी बना दिया। और राजा को पुजारी बनाकर फिर से मंदिर में सुखपूर्वक अपना जीवन व्यतीत करने लगा।

कुछ समय बाद, पार्वती माता भगवान शिव के साथ फिर से पृथ्वी पर आ गईं, और उसी मंदिर में आराम करने के लिए रुक गईं, और पार्वती माता ने देखा कि पंडित जो उनके श्राप के कारण कोढ़ी हो गए थे, इस बार पूरी तरह से स्वस्थ हैं। तो पार्वती माता ने पूछा कि आप स्वस्थ कैसे हुए? तो पंडित ने उन्हें पूरी प्रक्रिया बताई और पंडित ने बताया कि कैसे 16 सोमवार के व्रत के बाद उन्हें अपने कोढ़ से छुटकारा मिल सकता है।

इस तरह पार्वती माता प्रसन्न हुईं और पार्वती माता ने सोचा कि उनका पुत्र कार्तिकेय भी उनसे बहुत दिनों से दूर है और हो सकता है कि वह क्रोधित होकर

पार्वती माता से दूर चले गए हों, इसलिए वे अपने पुत्र से मिलना चाहती थीं लेकिन उनके पुत्र कार्तिकेय ने मना कर दिया। उससे मिलो। नहीं मिल रहा था इसलिए पार्वती माता भी सोलह सोमवार का व्रत करने लगीं और तीसरे सोमवार को ही भगवान कार्तिकेय अपनी माता पार्वती माता के पास लौट आए।

इसके बाद भगवान कार्तिकेय ने पूछा कि हे माता आपने ऐसा क्या किया कि मेरा क्रोध शांत हो गया और मैं वापस आ गया? तो इस पर पार्वती माता ने बताया कि मैंने सोलह सोमवार का व्रत करना शुरू कर दिया है जिससे तुम शांत हो गए और तुम वापस आ गए।

यह जानकर भगवान कार्तिकेय भी प्रसन्न हुए और उन्हें भी अपने मित्र ब्रह्मदत्त की बहुत याद आ रही थी क्योंकि वह अपने मित्र के राज्य जाने से बहुत दुखी थे, इसलिए उन्होंने भी सोलह सोमवार का व्रत करना

शुरू कर दिया। और पांचवें सोमवार को ही उसका मित्र ब्रह्मदत्त भगवान कार्तिकेय से मिलने लौटा। इस पर ब्रह्मदत्त ने पूछा कि तुमने ऐसा क्या किया कि मेरा वापस आना संभव हुआ? तो उस पर भगवान कार्तिकेय ने उन्हें सोलह सोमवार व्रत की कथा विधि बताई, जिससे ब्रह्मदत्त बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने भी फिर से इस व्रत को किया।

ब्रह्मदत्त का व्रत करते हुए वे विदेश यात्रा पर निकल पड़े। वहाँ एक राजा हर्षवर्धन की पुत्री राजकुमारी गुनजीत का स्वयंवर हो रहा था और राजा ने वचन दिया था कि हाथी की सूंड में एक माला दी जाएगी और यदि वह किसी भी व्यक्ति के गले में वरमाला डाल देगी तो उसकी पुत्री का विवाह उसके साथ कर दिया जाएगा।

इसके बाद ब्राह्मण भी बड़ी जल्दबाजी में स्वयंवर में चला गया। हाथी ने अपनी सूंड से उस माला को ब्राह्मण के गले में डाल दिया। और इसके बाद

राजकुमारी का विवाह एक ब्राह्मण के साथ तय किया गया। इस पर राजकुमारी गुंजन ने पूछा, हे प्राणनाथ, आपने ऐसा क्या किया था जिससे हाथी ने आपके गले में वरमाला डाल दी। उसके बाद ब्रह्मदत्त ने उन्हें सोलह सोमवार की कथा सुनाई जो भगवान कार्तिकेय ने उन्हें सुनाई थी।

जब यह बात राजा हर्षवर्धन को पता चली तो राजा हर्षवर्धन ने भी सोलह सोमवार का व्रत रखा। राजा हर्षवर्धन ने पूरे राज्य में यह घोषणा करवा दी कि यदि कोई व्यक्ति अपनी मनोकामना पूरी करना चाहता है तो वह सोलह सोमवार का व्रत कर सकता है। और इसके बाद पूरे देश में सोलह सोमवार के व्रत की प्रथा शुरू हो गई।

फिर पूरे देश में अलग-अलग जगहों पर सोलह सोमवार के व्रत की प्रक्रिया शुरू हुई और इसी तरह ब्रह्मदत्त भी अपनी रानी के साथ सुखी जीवन बिताने

लगे और जो सोलह सोमवार का व्रत करता है वह सुखी जीवन व्यतीत करने लगता है।

patilnbox.com